# भारत विभाजन बनाम मानवीय पाश्विकता

**साधना कुमारी**

भारत विभाजन इतिहास के पन्नों पर एक त्रासदीपूर्ण घटना थी जिसकी व्यापक प्रतिक्रिया लोगों के द्वारा हुई। इस घटना के साथ ही मानवता की रूह काँपने जैसी घटनाएँ होने लगी। प्रियवंद जी भारत विभाजन को एक अभूतपूर्व घटना मानते हुए देश के राजनीतिक नेताओं द्वारा चली गई चाल बताते हैं– ''भारत विभाजन एक अभूतपूर्व घटना है। भारत विभाजन का कारण न तो कोई बाहरी आक्रमण था, न गृहयुद्ध, न उत्पादन या पूँजी या बाजार की आर्थिक विवशताएँ और न ही कोई प्राकृतिक प्रकोप या स्थायी भौगालिक अवरोध। साफ–साफ शब्दों में यदि हम कहें तो यह तो करोड़ों मनुष्यों का संवैधानिक रूप से अपना प्रतिनिधित्व करने वाले नेताओं के माध्यम से स्वेच्छा से चुना हुआ निर्णय था।''